इंक़लाब ज़िन्दाबाद! मज़दूर एकता ज़िन्दाबाद!!

मारुति सुजुकी के संघर्षरत मज़दूरों का साथ दो!

मैनेजमेण्ट की गुण्डागर्दी, तानाशाही और अत्याचार के ख़िलाफ़ व्यापक मज़दूर एकता क़ायम करो!

मानेसर प्लांट में ग़ैरक़ानूनी तालाबन्दी और मज़दूरों के बुनियादी हक़ों पर हमले को नाकाम बनाने के लिए आन्दोलन को व्यापक बनाओ!

मज़दूर साथियो,

आपको पता ही होगा कि 29 अगस्त की सुबह से मारुति सुजुकी, मानेसर प्लांट में मैनेजमेंट ने तानाशाही करते हुए जबरन तालाबन्दी लागू कर दी है और 30 अगस्त तक 56 मज़दूरों को बिना केई कारण बताये बर्खास्त या सस्पेंड किया जा चुका है। मज़दूरों को एक सरासर ग़ैरक़ानूनी 'उत्तम आचरण शपथपत्र' (गुड कंडक्ट बांड) पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा जा रहा है। इस पर हस्ताक्षर करने का मतलब है कि मज़दूरों के सारे अधिकार छिन जायेंगे और मैनेजमेंट जब चाहे किसी भी मज़दूर को निकालकर बाहर कर सकता है। मारुति के मज़दूरों ने पहले की तरह ज़बर्दस्त एकजुटता दिखाते हुए इस काले कागज़ पर दस्तख़त करने से इंकार कर दिया है और अपने अधिकारों की लड़ाई के लिए कमर कस ली है। मैनेजमेंट ने मज़दूरों पर यह आन्दोलन ख़ुद ही थोपा है – मगर इस बार हमें उसे ऐसा मुँहतोड़ जवाब देना है कि आगे से ऐसा करने से पहले वह 1000 बार सोचे।

इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि इस आन्दोलन को और व्यापक किया जाये तथा एक दिन की भी देर किये बिना मैनेजमेंट और सरकार पर जनदबाव बनाया जाये। यह बात साफ़ है कि मैनेजमेंट ने बहुत सोची–समझी योजना के तहत और पूरी तैयारी के साथ मज़दूरों पर यह नया हमला किया है। हरियाणा सरकार खुलकर उसके साथ खड़ी है। गुड़गाँव की तमाम बड़ी कम्पनियाँ भी इस आन्दोलन को कुचलना चाहती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर मारुति के मज़दूरों की जीत होगी तो दूसरी कम्पनियों में अन्याय के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए मज़दूरों का हौसला बढ़ जायेगा। इसलिए हमें भी पूरी तैयारी के साथ और बिना देर किये अपने आन्दोलन को एकजुट तथा संगठित तरीके से आगे बढ़ाना होगा। मैनेजमेण्ट के पास पैसे की ताक़त है, पुलिस, सिक्योरिटी और गुण्डों की ताक़त है। सरकार भी उन्हीं की बात सुनती है, उन्हीं की सेवा करती है। **हम मज़दूरों के पास सिर्फ़ एक ताक़त है – अपनी एकता और भाईचारे की ताक़त!**

हमें अपनी इस लड़ाई को व्यापक स्वरूप देने के लिए गुड़गाँव के सभी मज़दूरों को इससे जोड़ना होगा। अनेक कारख़ानों की यूनियनों ने साथ देने की घोषणा की है। हमें विश्वास है कि यह समर्थन केवल एक गेट मीटिंग तक ही नहीं रहेगा। इसके साथ ही विभिन्न यूनियनों की संघर्ष समिति की ओर से मानेसर, गुड़गाँव और आसपास के औद्योगिक क्षेत्रों के मज़दूरों के नाम तत्काल साथ देने की अपील जारी करनी चाहिए। **गुड़गाँव ही नहीं, सारे देश के मज़दूरों से आज यूनियन बनाने का हक़ छीना जा रहा है ताकि मज़दूर अपने शोषण और लूट के ख़िलाफ़ एक होकर आवाज़ भी न उठा सकें। इसीलिए मारुति के मज़दूरों की लड़ाई हर मज़दूर के हक़ की लड़ाई है।** हमें बड़ी संख्या में पर्चे बाँटकर और पोस्टर निकालकर लाखों मज़दूरों तक अपनी आवाज़ को पहुँचाना होगा। **यही वक़्त है कि हमें मज़दूरों के साथ हो रहे अन्याय**

और ग़ुलामी के हालात के ख़िलाफ़ पूरे गुड़गाँव के मज़दूरों को साथ लेकर एक ज़बर्दस्त 'मज़दूर सत्याग्रह' छेड़ देना चाहिए।

हमें अपने आन्दोलन के समर्थन में जनदबाव बनाने के लिए देशभर के मज़दूर संगठनों, यूनियनों, इंसाफ़पसन्द नागरिकों, छात्रों, बुद्धिजीवियों आदि से भी अपील करनी चाहिए कि वे हरियाणा के मुख्यमंत्री, श्रम मंत्री, श्रम सचिव और मारुति सुजुकी इंडिया तथा जापान स्थित सुजुकी कंपनी के अधिकारियों को ईमेल, फैक्स, फोन, पत्र और टेलीग्राम के द्वारा अपना विरोध पत्र भेजें और हस्ताक्षर अभियान चलाकर ज्ञापन दें। अपने वेबसाइट, ब्लॉग, फ़ेसबुक आदि के ज़रिए इस आन्दोलन की खबरें लोगों तक पहुँचाएँ और उनसे समर्थन की अपील करें। हमें अपील करनी चाहिए कि नागरिक अधिकारकर्मियों की टीमें गुड़गाँव आकर स्थितियों की जाँच-पड़ताल करें, रिपोर्ट तैयार करें और शासन तथा जनता तक न्याय की आवाज़ पहुँचायें।

संघर्ष समिति की अपील पर विभिन्न संगठन अपने-अपने शहरों में, विशेष तौर पर, दिल्ली और चंडीगढ़ में इस मसले को लेकर विरोध प्रदर्शन आयोजित कर सकते हैं। दिल्ली और देश के अन्य शहरों से साथी गुड़गाँव आकर मज़दूरों के आंदोलन को समर्थन देंगे और उनके पक्ष में सत्याग्रह करेंगे तो हमारे संघर्ष को और भी बल मिलेगा।

हमें पूरे देश के ऑटोमोबाइल मज़दूरों की यूनियनों के नाम भी अपील जारी करनी चाहिए कि वे इस लड़ाई में अपने भाइयों का साथ दें। साथ ही हमें सुजुकी कम्पनी के सभी प्लांट के मज़दूरों के नाम और पूरी दुनिया की ऑटोमोबाइल वर्कर यूनियनों के नाम भी इंटरनेट पर अपील जारी करनी चाहिए कि वे जापान में सुजुकी कंपनी पर दबाव डालें। आपको याद होगा कि कुछ महीने पहले चीन में होंडा कंपनी के कई कारख़ानों के मज़दूरों ने इसी प्रकार व्यापक एकजुटता के दम पर बड़ी जीत हासिल की थी।

साथियो, जिस समय दिल्ली में भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ आन्दोलन की जीत का जश्न मनाया जा रहा था ठीक उसी समय मारुति के मज़दूरों के मूलभूत अधिकारों पर हमले की तैयारी हो रही थी। हमें उस आन्दोलन के नेताओं से भी अपील करनी चाहिए कि मज़दूरों के साथ हो रहे इस अन्याय के ख़िलाफ़ वे हमारा साथ दें। क्या मज़दूरों को उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित करना भ्रष्टाचार नहीं है? क्या कंपनी मैनेजमेंट के साथ सरकार की यह मिलीभगत जनता के प्रतिनिधियों द्वारा जनता के साथ विश्वासघात और भ्रष्टाचार का मामला नहीं है?

मारुति के मज़दूरों ने कभी भी कोई बड़ी माँग नहीं की है। वे तो बस सरकार के ही बनाये श्रम कानूनों को लागू करने की माँग कर रहे हैं। **अगर यह सरकार उन्हें इतना भी नहीं दिला सकती तो यह किस बात का लोकतंत्र है? यह तो लूटतंत्र है, लाठीतंत्र है! यह जनतंत्र नहीं, धनतंत्र है, दमनतंत्र है!**

मारुति के मज़दूरों का ऐलान है कि इस लड़ाई को वे बीच में नहीं छोड़ेंगे। इस पर्चे के ज़रिए हम सभी मज़दूरों का आह्वान कर रहे हैं कि इस लड़ाई में उनका साथ देने के लिए आगे आयें। हम अपने अनुभव से जानते हैं कि जब तक इलाक़े के तमाम मज़दूर एक-दूसरे का साथ नहीं देंगे तबतक एक-एक कारख़ाने के मज़दूर अकेले-अकेले लड़कर नहीं जीत सकते। **हम मिलकर लड़ेंगे, तो ज़रूर जीतेंगे!**

अन्धकार का युग बीतेगा, जो लड़ेगा वो जीतेगा!

संग्रामी अभिवादन के साथ,

बिगुल मज़दूर दस्ता

बिन हवा न पत्ता हिलता है, बिन लड़े न कुछ भी मिलता है!

मज़दूरों ने जान लिया है, हक लेना है ठान लिया है!

हर ज़ोर-जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है!

सम्पर्क: फोन: 9213639072, 9910462009, ईमेल: bigul@rediffmail.com

बिगुल मज़दूर दस्ता के लिए रूपेश कुमार द्वारा प्रकाशित और भागीरथ प्रिंटर्स, गुड़गांव द्वारा मुद्रित। 31 अगस्त, 2011